रिपोर्ट समारोह -2
महाराजा दाहिर सेन सप्त सिंधु काव्य उत्सव

(16,17,18 सितंबर 2020)

इस समारोह में 12 देशों से 12 भाषाओँ के कविओं और चिंतकों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम के पहले दिन डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री कुलपति हिमाचल प्रदेश केंद्रीय यूनिवर्सिटी, धर्मशाला ने बीजभाषण दिया और इस दिन मुख्य अतिथि सुखी बाठ संस्थापक, पंजाब भवन कनेडा रहे। दूसरे दिन मुख्य अतिथि प्रोफेसर जोगेश चंद्र दुबे, कुलपति, जगदगुरु विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश रहे |तीसरे दिन मुख्य मेहमान डॉ. हरमोहिंदर सिंह बेदी,कुलाधिपति हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला रहे। इस कार्यक्रम में 125 लोगों ने भाग लिया।

अध्यक्ष, पंजाबी एवं डोगरी विभाग
Head, Department of Punjabi & Dogri
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Himachal Pradesh
धौलाधार परिसर-1, धर्मशाला-176215
Dhauladhar Parisar-1 Dharamshala-176215

2 समारोह

16,17,18, sep. 2020 महाराजा दाहिर सेन सप्त सिंधु काव्य उत्सव केन्द्रीय विश्वविध्यालय हिमाचल प्रदेश के पंजबी एव डोगरी विभाग द्वारा मनाया गया।

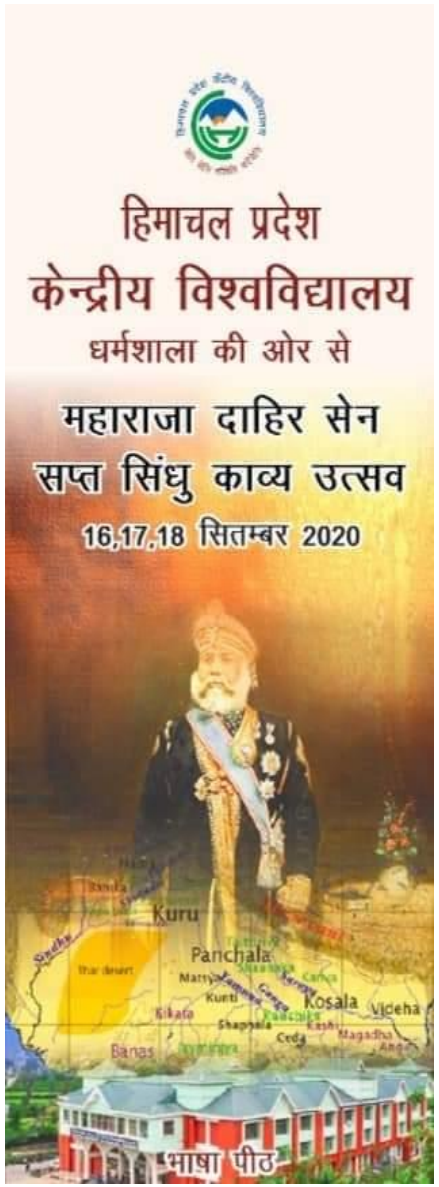

महाराजा दाहिर सेन सप्त सिन्धु काव्य उत्सव

इतिहास में पश्चिमोत्तर भारत सप्त सिन्धु के नाम से जाना जाता है। जिन सात नदियों के क्षेत्र का नाम सप्त सिन्धु पड़ा, वे नदियाँ सिन्धु, सरस्वती, सतलुज, रावी, चिनाब, व्यास और झेलम है। ये सभी नदियाँ कहीं न कहीं जाकर सिन्धु नदी में ही मिल जाती हैं। रिगवेद में सप्त सिन्धु की स्तुति बार–बार की गई है। सरस्वती नदी की धारा काल के प्रवाह में लुप्त हो गई लेकिन अभी भी कहीं न कहीं क्षीण धारा आज भी विद्यमान है। इस विशाल सप्त सिन्धु क्षेत्र में अविभाजित पंजाब वर्तमान पूर्वी व पश्चिमी पंजाब) हिमाचल प्रदेश व हरियाणा, जम्मू कश्मीर, लद्दाख, गिलगित, बल्तिस्तान, सिन्ध प्रदेश, खैबर पख्तूनख्वा और बलोचिस्तान समाहित है। सप्त सिन्धु क्षेत्र एशिया की संस्कृति का पालना भी कहा जा सकता है। सिन्धु सरस्वती घाटी से शुरु हुई यह सांस्कृतिक यात्रा, वैदिक–श्रमण परम्परा से होते हुए मध्यकालीन दशगुरु परम्परा तक अबाध रूप में विकसित हुई है। सप्त सिन्धु के इन्हीं मैदानों में महाभारत का युद्ध हुआ। यहीं कृष्ण–अर्जुन संवाद में गीता रची गई। काँगड़ा का नगरकोट दुर्ग आज भी सप्त सिन्धु की शान है। विश्व प्रसिद्ध तक्षशिला विश्वविद्यालय इसी सप्त सिन्धु क्षेत्र की देन है। पाणिनि की अष्टाध्यायी यहीं रची गई। इसी उत्तरापथ में चन्द्रगुप्त मौर्य ने यूनान के सिकन्दर को चुनौती दी। इसी सप्त सिन्धु के दर्रा खैबर से तुर्कों, मुगल, मंगोलों व अरबों के आक्रमण हुए। लेकिन उनके प्रतिकार के लिए सप्त सिन्धु की इन्हीं पर्वतीय उपत्यकाओं में दशम गुरु गोबिन्द सिंह जी ने खालसा पन्थ की सृजना की। सप्त सिन्धु के इसी क्षेत्र में ''देहि शिवा वर मोहे........'' का नाद गूँजा। सप्त सिन्धु के इस विशाल क्षेत्र को मुगलों और अफ्गानों से मुक्त करवा कर महाराज रणजीत सिंह ने दर्रा खैबर तक केसरी ध्वज फहराया था। इस लम्बी ऐतिहासिक यात्रा, जो अबाध रूप में अभी भी जारी है, उनकी गाथाएँ सप्त सिन्धु की अनेक जानी अनजानी भाषाओं के लोक साहित्य में आज भी गूँजती हैं। इसी गूँज को समर्पित है यह सप्त सिन्धु काव्य उत्सव। महाराजा दाहिर सेन वह युगपुरुष थे जिसने 712 ए.डी. में अरब आक्रमणकारी मुहम्मद बिन कासिम की सेना से लोहा लेते हुए (21 जून 712 ए.डी.) में आत्म बलिदान किया था। इसी दिन से भारत के इतिहास में प्रतिरोध के एक नए अध्याय की रचना हुई थी। अतः महाराजा दाहिर सेन सप्त सिन्धु काव्य उत्सव इतिहास की इसी यशगाथा का अगला कदम है। महाराजा दाहिर सेन काव्य उत्सव हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के भाषा पीठ की ओर से उनके बलिदान दिवस पर आयोजित किया जाएगा। यह इस प्रकार का पहला उत्सव है, लेकिन कोरोना संकट के कारण 21 जून 2020 का आयोजित नहीं हो सका। अतः यह काव्योत्सव विलम्ब से आयोजित किया जा रहा है।

कार्यक्रम

पहला दिन (16 सितम्बर, 2020)
समय – 5 से 7 बजे (शाम)

बीज भाषण
प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री
(कुलपति-हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला)

मुख्य अतिथि
सुखी बाठ (संस्थापक पंजाब भवन, कैनेडा)

संचालन
(डॉ. नरेश कुमार (पंजाबी एवं डोगरी विभाग)

पंजाबी के कवि
गुरभजन गिल (लुधियाना), परमिन्दर सोढी (जपान), डॉ. मनमोहन (चंडीगढ़), संदीप शर्मा (लुधियाना), गगनदीप शर्मा (रामपुर), साकिया हयात, तारन गुजराल (चंडीगढ़), डॉ. सरबजीत सोहल (चंडीगढ़), अमित कुमार (कादियां), तरलोचन लोची (लुधियाना), सिम्रत गगण (अमृतसर), विशाल (इटली), हरमीत आर्टिस्ट (अमृतसर), डॉ. विक्रम (अमृतसर), सुरिन्दर गीत (कैनेडा), डॉ. रविन्दर (बटाला), योगिंदर पारस (जम्मू-कश्मीर), राज लाली (अमेरिका), जगदीप सिद्धु (मोहाली), देव दर्द (अमृतसर)

दूसरा दिन (17 सितम्बर, 2020)
समय – 5 से 7 बजे (शाम)

स्वागत
डा. राजकुमार उपाध्याय 'मणि' (अध्यक्ष-हिन्दी विभाग)

मुख्य अतिथि
प्रो. योगेश चंद्र दुबे (कुलपति, जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट, उत्तर प्रदेश)

संचालन
डा. चंद्रकांत सिंह (सहायक प्रो. हिन्दी विभाग)

हिन्दी के कवि
प्रो. प्रत्यूष गुलेरी (धर्मशाला), प्रो. गौतम शर्मा (कांगड़ा), हरीश कुमार (बरनाला), अनामिका वशिष्ठ शर्मा (हरियाणा), डॉ. रतन लाल शांत (कश्मीर), डॉ. उपेन्द्र रैणा (कश्मीर), डॉ. महाराजकृष्णभरत (जम्मू), शशांक कुलकर्णी (जम्मू), श्री एम.के. संतोषी (दिल्ली), प्रो. बलवंत जानी (गुजरात), डॉ. चकाचौंद झानपुरी (वाराणसी), प्रो. ओमप्रकाश सारस्वत (शिमला), मुकेश कुमार (जम्मू-कश्मीर), दीपाल बेताब (जम्मू), प्रिया शर्मा (धर्मशाला)

संस्कृत भाषा के कवि
प्रो. राजेन्द्र मिश्र (शिमला), भावप्रकाश गांधी (गुजरात), प्रमोद शर्मा (राजस्थान), कमल गौतम (हिमाचल)

तीसरा दिन (18 सितम्बर, 2020)
समय – 5 से 7 बजे (शाम)

स्वागत
डॉ. नंदूरी राजगोपाल (अध्यक्ष-अंग्रेजी विभाग)

संचालन
डॉ. कुलदीप कुमार (सहायक प्रो. संस्कृत विभाग)

मुख्य अतिथि
डॉ. हरमोहिन्द सिंह बेदी (कुलाधिपति, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला)
विशिष्ट अतिथि : दिव्यांशु पाण्डेय

डोगरी के कवि
कुलदीप बीथी, प्रवेज मलिक, कीर्ति ठाकुर, कँवल कुमार केसर, चमन लाल

कश्मीरी के कवि
प्यारे हितेश, डॉ. सतीश विमल, श्री प्रेम नाथ शाद (कश्मीर), श्रीमती सुनीता रैणा, पण्डित (कश्मीर)

पोठोहारी के कवि
स्वामी अंतरनीरव (जम्मू)

सिन्धी भाषा के कवि
शालनी सागर (दिल्ली), टविंकल चंदानी दिल्ली)

पुंछी भाषा के कवि
श्री बलराम बख्शी

धन्यवाद:– डॉ. बृहस्पति मिश्र (प्रमुख–भाषा संकाय)

आयोजन समिति
डॉ. हर्षवर्धन (निदेशक, सप्त सिन्धु परिसर)
डॉ. बृहस्पति मिश्र (प्रमुख–भाषा संकाय),
डॉ. नारायण सिंह राव (डीन, समाज विज्ञान)
डॉ. अरुन शर्मा (चेयर प्रो. दीनदयाल उपाध्याय चेयर)
डॉ. राजकुमार उपाध्याय "मणि" (अध्यक्ष–हिन्दी विभाग)
डॉ. नंदूरी राजगोपाल (अध्यक्ष–अंग्रेजी विभाग)
डॉ. मलकीत सिंह (अध्यक्ष जम्मू–कश्मीर विभाग)
डॉ. जगमीत बावा (अध्यक्ष), राजनीति शास्त्र विभाग

संयोजक
पंजाबी और डोगरी विभाग
डॉ. नरेश कुमार
डॉ. हरविन्द्र सिंह

Link:- meet.google.com/afz-ksjc-zrr
और CUHP के फेसबुक पेज पर देख सकते हैं।